आज का पुरुषार्थ 17 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज स्वयं को ज्ञान रत्नों से सुसज्जित करेंगे और बापदादा के छत्रछाया के अंदर स्वयं को अनुभव करेंगे "*

हम सभी बाबा के बच्चे इस संसार में सबसे अधिक **भाग्यवान** और **बुद्धिमान** है। क्योंकि स्वयं भगवान परम शिक्षक बनकर हमें पढ़ाने आया है। रोज़ ज्ञान रत्नों से हमारा **श्रृंगार** कर रहा है। हमारी झोलियाँ भर रहा है।

याद रखेंगे, जो आत्मायें जितने ज्ञान रतन यहाँ धारण करती है, यह ज्ञान रतन **सतयुग** में जाकर हीरे जवाहरातों में बदल जाता है। यहाँ का ज्ञान का भण्डार वहाँ स्थूल धन-सम्पदा का भण्डार दिला देता है।

तो जिन्हें बहुत धनवान बनना है, वह यहाँ ज्ञान रत्नों से मालामाल बने। **ज्ञान रत्नों का दान करें।** यह बहुत बड़ी चीज़ है। क्योंकि यह ज्ञान रतन किसी मनुष्य के मन को अंधकार से निकाल प्रकाश की ओर ले चलते है।

युगों से हम भगवान को कहते थे ... " *हे प्रभु ! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो*"

अब वह अंधकार मिटाकर प्रकाश की ओर ले चल रहा है। तो हमें चलना चाहिए या नहीं? नहीं तो हम गायन ही करते जायेंगे और प्रभु जी जब प्रकाशित करके चले जायेंगे।

ज्ञान रतन स्वयं भगवान दे रहे है। उनसे स्वयं को भरपूर करते चले। और इन ज्ञान रत्नों से स्वयं को **भरपूर** वही कर सकते है .. जो **प्रतिदिन ज्ञान मुरली का श्रवण करके** उसपर विचार मंथन करते है।

रोज़ बाबा हमें सुन्दर से सुन्दर बातें बताते है मुरली में। हमें स्मृतियाँ दिलाते है, हमें जगाते है। भगवान हमसे बात करते है। हमारे नैन खोलते है। हमारे दुःख हरते है। हमें सुख प्रदान करते है।

तो समय निकाल रोज़ मुरली सुनने अवश्य जाना चाहिए। घर में पर लेना अलग बात है। सेन्टर जाकर मुरली सुनना इसका बहुत बड़ा महत्व है।

बहुत अच्छी **स्थिति** में बैठकर, अच्छे **vibrations** में, अच्छा अभ्यास करते हुए यदि हम मुरली का श्रवण करते है, तो मुरली हमें सहज ही धारण हो जाती है। और यह ज्ञान रतन हमारे चित्त को प्रकाशित करते रहते है। हमारे अंदर का अज्ञान मिटता रहता है।

विकारों ने जो काली छाया हम पर डाल दी है उससे हम मुक्त होते रहते है। इसके **महत्व को जानकर** इसपर पूरा ध्यान देना चाहिए।

ऐसा न हो कि भगवान पढ़ाने आया हो और हमारे पास पढ़ने जाने की फुर्सत भी न हो। यह बहुत बड़ी अवज्ञा होगी। ऐसा करने से ईश्वरीय बल हमें नहीं मिलेगा। ईश्वरीय अनुकम्पा का अधिकारी भी नहीं बनेंगे।

बाबा ने स्वयं कहा है .. " *यदि तुम्हें बाप से प्यार है तो तुम्हे उसकी मुरली से भी प्यार होना चाहिए .. उसके यज्ञ से .. उसके कर्तव्य से भी प्यार होना चाहिए .. और उसके परिवार से भी प्यार होना चाहिए* "..

यदि तुम दिल से कहते हो .. **बाबा मेरा है** .. परन्तु मुरली से प्यार नहीं रखते .. तो बाबा ऐसे प्यार को स्वीकार नहीं करते है "

तो आज से **ज्ञान चिन्तन** के द्वारा स्वयं को ज्ञान रत्नों से सजाने का संकल्प करे। इसके लिए मुरली से सुन्दर बातें **रोज़ लिखे** भी और उनपर विचार भी करे। आप यह न सोचे, मेरा तो ज्ञान मंथन चलता नहीं।

तो इसतरह स्वयं को **ज्ञान की भण्डार** से प्रतिदिन भरते भरते हम मालामाल हो जायेंगे। और आज सारा दिन याद रखेंगे →

" बाबा सामने खड़ा होकर हमें कुछ कह रहा है "

.... क्या कह रहा है, वह आप स्वयं विचार करेंगे, सुनेंगे।

और आज सारा दिन →

" बापदादा का हर घन्टे में एकबार आह्वान करेंगे .. और फ़ील करेंगे .. उनका वरदानी हाथ मेरे सिर पर है .. उनके वरदानी हाथ की छत्रछाया मेरे ऊपर है "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org